आइए देखते हैं कि हिंदू और इस्लाम में विवाह को कैसे संबोधित करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हिंदू विवाह को एक पवित्र बंधन मानता हैं और इसे समाप्त करने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। तलाक की कोई प्रक्रिया नहीं है।

दूसरी ओर, इस्लाम इसे एक भौतिक संबंध के रूप में संबोधित करता है और एक तरफा ट्रिपल तलाक के माध्यम से तोड़ने की अनुमति देता है।

हिंदू महिलाओं को उनकी वैवाहिक स्थिति के बारे में पूरी सुरक्षा देता है जबकि इस्लाम उन्हे पति की इच्छा पर छोड़ देता है।

बाहरी कपड़ों और उपस्थिति के बारे में भी हिंदू अधिक लचीला है।

ऐसा कोई उदाहरण नहीं हैं कि कोई हिन्दू महिला कार्यालय में 'घूँघट' पहनने के लिये लड रही हों।

लेकिन हमें कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां मुस्लिम महिलाएं हिजाब और बुरखा पहनने के लिए लड़ती हैं। मुस्लिम पुरुष दाढ़ी रखने के लिए लड़ते हैं।

यह मज़ेदार है क्योंकि पहली जगह में सभी धर्मों के महिला और पुरुष अपने धर्म की अवज्ञा कर रहे हैं जब वे विदेश में काम करने के लिए जाने का फैसला करते हैं या जब महिला और पुरुष एक दुसरे से घुलमिल जाते है। कोई कोई तो शराब आदि का सेवन भी करते है। इन

गतिविधियों में से कोई भी शास्त्रों में वर्णित नहीं है। फिर बाहरी पहेराव से शास्त्रों को मानने का पाखंडी दिखावा क्यों किया जाए? वे किसे धोखा दे रहे हैं? परमेश्वर को?

वास्तव में बोलना, बाहरी पहेराव महत्वपूर्ण नहीं है। बाहर का पहेराव, रहन सहन में सादगी होना जरूरी है। भगवान का स्मरण अंदर से करना मायना रखता है। भगवान को मन से अपना मान कर उससे प्यार करना महत्वपूर्ण है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132